विपक्ष में तर्क :— B.A Part - II

करुणा की विजय के विरोध का अन्त तथा अन्त में पदीना का पतन के समय गौतम बुद्ध के द्वारा अभय हाथ उठाने के कारण गौतम को 'अजातशत्रु' का नायक कहना उचित नहीं। नायक आदि से अन्त तक नाटक में उपस्थित रहता है। गौतम बुद्ध आरम्भ से लेकर अन्त तक उपस्थित नहीं रहते। बीच-बीच में जब कभी उनकी इच्छा होती है, वे उपस्थित हो जाते हैं। इस दृष्टि से उन्हें नायक कहना उचित नहीं। उनके चरित्र में गत्यात्मकता भी नहीं देखी जाती। वे एक सन्त हैं जो सत्य के प्रचार के लिए मगध, कोशल और कौशाम्बी घूमते अवश्य हैं। किसी भी कार्य-व्यापार में उनका सक्रिय सहयोग नहीं देखा जाता। उनकी बातों से प्रभावित सक्रिय पात्र उनसे बाजी मार ले जाते हैं। गौतम के चरित्र में अन्तर्द्वन्द्व का सर्वथा अभाव है। इसलिए वे व्यावहारिक तथा लौकिक पात्र के रूप में खरे नहीं उतर पाते। गौतम बुद्ध को 'अजातशत्रु' का एक प्रमुख

Scanned with CamScanner

पात्र कहा जा सकता है, नायक नहीं।

विम्बसार के पक्ष और विपक्ष में तर्क

डा० गुलाबराय ने बिम्बसार को 'अजातशत्रु' का नायक माना है। उनके अनुसार यद्यपि बिम्बसार का "परिणाम में अन्त हो जाता है तथापि उसको एक प्रकार की से फल-प्राप्ति होती है। उनके जीवन की शान्तिमयी साधना पूरी होती है। अजातशत्रु का हृदय-परिवर्तन हो जाता है। जिन सिद्धान्तों को वे मानते थे उनकी विजय होती है। अन्त में शान्ति का वातावरण उपस्थित हो जाता है। यही नाटक का प्रसादान्त होता है। कारणा होते हुए भी वह दुखान्त नहीं है। यदि हम नाटक के नाम की बाधा को ओझल कर दें तो बिम्बसार ही इसके नायक होते हैं।

विपक्ष में तर्क :—

यह सच है कि डा० गुलाबराय ने

Scanned with CamScanner

बिम्बसार के मनोनुकूल अन्त होने के कारण बिम्बसार को नायक माना है किन्तु वे नायक के सर्वथा योग्य पात्र नहीं कहे जा सकते। 'अजातशत्रु' का आरंभ अजात की क्रूरता से होता है और अन्त भी तभी होता है जब 'अजातशत्रु' की दानव प्रवृत्ति समाप्त हो जाती है। बिम्बसार इतिहास-प्रसिद्ध पुरुष भले ही हैं, नाटक की कथावस्तु में गति अजातशत्रु के कारण आती है, बिम्बसार के कारण नहीं। वे एक विरक्त पात्र हैं, उनमें गतिशीलता नहीं। साथ ही वे एक दुर्बल प्रकृति के साधारण व्यक्ति के समान प्रतीत होते हैं जिनमें मनुष्य की छोटी-छोटी दुर्बलताएँ भी वर्तमान हैं। इसलिए बिम्बसार को 'अजातशत्रु' नाटक का नायक नहीं कहा जा सकता।

अजातशत्रु के पक्ष और विपक्ष में तर्क

सम्पूर्ण फल-लाभ की दृष्टि से अजातशत्रु को ही इस नाटक का नायक कहा जा सकता है। भारतीय नाट्यशास्त्र भी नायक-निर्णय के लिए फललाभ पर

Scanned with CamScanner

विशेष जोर देता रहा है। 'अजातशत्रु' एक विरोधमूलक नाटक है। इसमें द्वन्द्व की प्रधानता है। अजात की क्रूरता एवं उसकी हिंसक प्रवृत्तियों से ही 'अजातशत्रु' नाटक का आरंभ होता है। गौतम बुद्ध, वासवी, पद्मावती मल्लिका इत्यादि पात्र करुणा की सराहना करते हैं। अजातशत्रु इस करुणा और अकरुणा के झूले में डूबता-उतराता रहता है। इसीलिए उसके चरित्र में शिथिलता नहीं गतिशीलता है। सम्पूर्ण नाटक पर यदि गम्भीरतापूर्वक विचार किया जाये तो न तो बिम्बसार के चरित्र में यह द्वन्द्व देखा जाता है और न गौतम में। आरम्भ से अजात अकरुणा से प्रभावित रहता है और जीवन संसार में प्रतिवर्ष अनेक अकांड ताण्डव करता है। आदि से अन्त तक उसका चरित्र गतिशील बना रहता है। इस दृष्टि से अजातशत्रु को ही प्रस्तुत नाटक का नायक कहा जा सकता है।

Scanned with CamScanner